प्रमाणप्रमेयकलिका (फोल्डर नं. ००१०४६)

नरेन्द्रसेन विरचित – सम्पादक-दरबारीलाल कोठिया

मुख्य टाइटल

विषयानुक्रमणिका

ग्रन्थ संकेत-सारिणी ---------- ७

ग्रन्थमाला संपादकोंका वक्तव्य ---------- ११

प्राक्कथन ---------- १५

संपादकीय ----------३१

प्रस्तावना ---------- १-६०

ग्रन्थ

प्रमाणमेयकलिका ---------- १

नाम ---------- १

भाषा और रचना शैली ----------२

बाह्यविषय-परिचय ----------३

आभ्यन्तरविषय-परिचय ---------- ४

मंगलाचरण ---------- ४

तत्त्वजिज्ञासा ---------- ७

प्रमाणतत्त्व परीक्षा ---------- ११

ज्ञातृव्यापार परीक्षा ---------- ११

इन्द्रियवृत्ति-परीक्षा ---------- १४

कारकसाकल्य परीक्षा ---------- १५

सन्निकर्ष परीक्षा ---------- १६

प्रमाणका निर्दोष स्वरूप ----------१८

प्रमाणका फल ---------- १९

प्रमाण और फलका भेदाभेद ---------- १९

ज्ञानके अनिवार्य कारण ---------- २०

प्रमेयतत्त्व परीक्षा ---------- २२

सामान्य परीक्षा ---------- २३

विशेष परीक्षा ----------३१

सामान्यविशेषोभय परीक्षा ---------- ३७

ब्रह्म परीक्षा ---------- ४२

वक्तव्यावक्तव्यतत्त्व-परीक्षा ---------- ४६

सामान्य विशेषात्मक प्रमेय सिद्धि ---------- ४७

ग्रन्थकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थकर्त्ताका परिचय -- ४८
नरेन्द्रसेन नामके अनेक विद्वान् --- ४८
प्रमाणप्रमेयकलिकाके कर्त्ता नरेन्द्रसेन --- ५७
नरेन्द्रसेनकी गुरु-शिष्य परम्परा --- ५८
नरेन्द्रसेनाक समय -- ५९
नरेन्द्रसेनका व्यक्तित्व और कार्य --- ५९
उपसंहार --- ६०
ग्रन्थ विषय सूची -- ६१
प्रमाणप्रमेयकलिका मूल और टिप्पणी -- १-४६
मङ्गलाचरणम् -- १
तत्त्व जिज्ञासा ---१-३
प्रमाणतत्त्वपरीक्षा --- ४-१८
प्रभाकराभिमतस्य ज्ञातृव्यापारस्य प्रामाण्यपरीक्षणम् --------------------------------------- ४-६
ज्ञातुर्व्यापारो भिन्नोभिन्नो वा -- ४
भेदे संबन्धासिद्धिः --- ४
स क्रियात्मकोक्रियात्मको या -- ५
क्रियात्मकत्वे सा क्रियापि भिन्ना अभइन्ना वा -- ५
अक्रियात्मकत्वे कथमसौ व्यापारो नाम --- ५
अभिन्नत्वे तु तयोरेकरूपतापत्तिः -- ५
पुनरप्यसौ नित्योनित्यो वा -- ६
नित्यत्वेर्थक्रियासम्भवः --- ६
अनित्यत्वे चोत्पादककारणाभावः -- ६
आत्मन उत्पादककारणत्वाभ्युपगमे तस्य नित्यत्वेन पूर्ववदर्थक्रियानुपपत्तिः -------------- ६
सांख्य-योगाभिमताया इन्द्रियवृत्तेः प्रामाण्यपरीक्षणम् --------------------------------------- ७-९
इन्द्रियवृत्तेरचेतनत्वेन तस्या अर्थप्रमितौ साधकतमत्वायोगः ---------------------------- ७
अचेतनत्वं चन्द्रियाणां प्रकृतिपरिणामत्वात् ---८
इन्द्रियवृत्तिरिन्द्रियेभ्यो भिन्ना भिन्ना वा ---८
बेदे तेषामेवेयं वृत्तिर्नान्येषामिति ---८
अभेदे इन्द्रियाण्येव वृत्तिरेव वा स्यात् --८
ज्ञानेन व्यवहितत्वादपि नासौ प्रमाणम् ---८
भट्टजयन्ताभिमतस्य सामग्र्यपरनामकस्य कारकसाकलस्य प्रामाण्यपरीक्षणम् ----------- १०-१४
कारकसाकल्यस्य स्वरूपमेवासिद्धम् --- १०
सकान्येव कारकाणि कारकसाकल्यं तद्धर्मो वा तत्कार्यं वा पदार्थान्तरं वेति
विकल्पैः तस्य निरासः -- ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारकसाकल्यस्य सकलकारकरूपत्वे कर्तृकर्मकरणरूपाणां तेषामेकत्रैकदानुपपत्तिः
विरोधश्च सहानवस्थालक्षणः --१२
तद्धर्मत्वे संयोगोन्यो वा --१२
असौ कारकेभ्यो भिन्नो भइन्नो वा --१३
तत्कार्यत्वेपि विकल्पद्वयम् --१३
नित्यानां तज्जनकत्वम्,.... --१३
अनित्यानां तज्जनकत्वे त्वपसिद्धान्तः --१३
पदार्थान्तरत्वे सर्वेषामपि पदार्थान्तराणां साकल्यप्रसङ्गः ------------------------------ १४
पदार्थान्तरमपि तज्ज्ञानमन्यद्वा -- १४
इत्थं कारकसाकल्यस्य स्वरूपेणासिद्धत्वात्... -- १४
यौगाभिमतस्य सन्निकर्षस्य प्रामाण्यपरीक्षणण् -- १५-१६
सन्निकर्षस्य साधकतमत्वाभावः -- १६
अव्याप्तिरतिव्याप्तिश्च -- १६
असंभवदोषोपि -- १६
ज्ञानेन व्यवहितत्वाच्च न प्रामाण्यं सन्निकर्षस्य -- १६
स्वमतेन स्वार्थव्यवसायात्मकस्य ज्ञानस्यैव प्रामाण्य साधनम् --------------------------१७-२२
साक्षादर्थप्रमितौ साधकतमत्वेन ज्ञानमेव प्रमाणमिति प्रतिपादनम् ---------------------- १७
प्रमाणत्वान्यथानुपपत्तेरिति हेतुनापि तस्यैव सिद्धिः ------------------------------------ १७
प्रतिज्ञार्थैकदेशासिद्धत्वनिरासः --१८
अर्थज्ञानस्य प्रमाणत्वे फलाभावप्रसङ्ग इति नैयायिकापत्तेर्निरासः -----------------------१८
प्रमाणस्य साक्षात्फलमज्ञाननिवृत्तिः --१८
परम्पराफलं च हानोपादानोपेक्षा--१८
अर्थाजन्यत्वेपि ज्ञानस्यार्थप्रकाशकत्वं योग्यतावशादेव ---------------------------------- १९
ज्ञानस्य स्वार्थव्यवसायात्मकत्वसिद्धिः --२१
बौद्धाभिमतस्य चतुर्विधप्रत्यक्षस्यापि अविसंवादित्वेन व्यवसायात्मकत्वसाधनम् ----------२१
ज्ञानस्य स्वव्यवसायात्मकत्वसिद्धिः -- २२
स्वात्मनि क्रियाविरोधपरिहारः -- २३
प्रमेयतत्वपरीक्षा -- २५-४६
सामान्यमेव प्रमाणस्य विषय िति मतस्य परीक्षणम् -------------------------------- २५-२६
विशेषनिरपेक्षस्य सामान्यस्यासंभवः -- २५
कुमारिलोक्त्या समर्थनम् -- २५
अनुमानेन केवलसामान्यस्य निराकरणम् -- २६
सामान्यं वास्तवमवास्तवं वेति विकल्पद्वयेनापि सामान्यस्य निरासः ------------------- २६
वास्तवत्वे धर्मो धर्मी वा -- २६
धर्मत्वे साधारणोसाधारणो वा -- २६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मित्वे असिद्धमेव -- २६

अवास्तवत्वे सौगतमतप्रसङ्गः -- २६

विशेष एव प्रमाणस्य विषय इति सौगतमतस्य परीक्षणम् ----------------------------- २७-३०

सामान्यनिरपेक्षस्य विशेषस्याप्रतिभासः -- २७

पूर्वपक्षिणा स्वतन्त्राणां विशेषाणां साधनप्रयासः -- २७

प्रत्यक्षस्यानुमानस्य वा द्रव्याग्राहकत्वम् --- २७-२९

जैनेन पूर्वक्षिणो निरासः --- ३०

प्रत्यभिज्ञानेन प्रमाणेन द्रव्यसिद्धिः --- ३०

सापेक्षस्य सामान्यविशेषोभयस्य प्रमाणविषयत्वसिद्धिः -------------------------------------३१

प्रमेयत्वहेतुना जीवादितत्त्वस्य सामान्यविशेषात्मकत्वसाधनम् --------------------------३१

तत्त्वस्य सामान्यविशेषात्मकत्वसाधने सप्तभङ्गीप्रयोगप्रदर्शनम् -------------------------३१

वैशेषिकाभिमतस्य परस्परनिरपेक्षसामान्यविशेषोभयस्य प्रमाणविषयत्वनिरासः ----------- ३१-३६

निरपेक्षोभयस्य प्रमाणविषयत्वे विरोधाद्यष्टदोषप्रसङ्गः ---------------------------------३१

साद्वादिनां तु जात्यन्तरस्वीकारणेन दोषाभावः --------------------------------------- ३२

द्रव्यादिषण्णां पदार्थानां भेदसाधने वैशेषिकाणां पूर्वपक्षः -------------------------------- ३२

द्रव्यलक्षणण् -- ३३

गुणलक्षणण् --- ३३

कर्मलक्षणण् --- ३३

कर्मलक्षणण् --- ३३

सामान्यलक्षणण् -- ३३

विशेषलक्षणण् --- ३४

समवायलक्षणम् -- ३४

द्रव्यादिभेदसाधने प्रयुक्तानां... --- ३४

जैनानां उत्तरपक्षः --- ३५

द्रव्याद् गुणादीनां भेदे अस्यायं गुण इत्यादिव्यपदेशाभावः ---------------------------- ३५

व्यपदेशाभावश्च संयोगादिसम्बन्धासंभवात् --- ३५

द्रव्यगुणयोरयुतसिद्धत्वेन समवायस्वीकारोपि न युक्तः ---------------------------------- ३५

अयुतसिद्धिलक्षणस्याप्यनुपपत्तिः -- ३५

गुणगुणात्मकं द्रव्यपर्यायात्मकं जात्यन्तरमेव प्रमाणविषयमिति प्रदर्शनम् -------------- ३६

परमब्रह्म एव प्रमाणस्य विषय इति वेदान्तिनां मतस्य परीक्षणम् ---------------------- ३६-४२

विधिरेव प्रमाणविषयः,.... -- ३६

निर्विकल्पकसविकल्पकभेदात् प्रत्यक्षं द्विविधम् --- ३७

ब्रह्मणः निर्विकल्पकप्रत्यक्षविषयत्वम् --- ३७

प्रत्यक्षं विधातृ, न निषेधृ इति प्रतिपादनम् --- ३७

सविकल्पकमपि तत्सद्भावसाधकम् -- ३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुमानादपि तत्सिद्धिः-- ३७
प्रत्यक्षादीनां प्रमाणानां भावविषयत्वमेव -- ३७
अभावप्रमाणस्य तद्विषयस्य चाभावस्य वेदान्तिना निराकरणम् ------------------------ ३८
प्रमेयत्वेन हेतुना सर्वस्य तत्त्वस्य विधित्वसाधनम् ------------------------------------- ३८
प्रतिभाससमानत्वेन हेतुनापि विधिमात्रस्यैव सिद्धिः ------------------------------------- ३८
आगमोपि तदावेदकः --- ३८
अन्यतोपि तद्विवर्त्तत्वाद् हेतोः परमपुरुषसिद्धिः -- ३९
सर्वभेदानां तद्विवर्त्तत्वं च सत्त्वरूपान्वयसत्वात् -- ३९
जैनैः ब्रह्मरूपस्य विधिमात्रतत्त्वस्य निराकरणम् --------------------------------------- ३९
अद्वैतब्रह्मसाधने प्रमाणभावः -- ३९
प्रमाणाभ्युपगमे द्वैतसिद्धिप्रसङ्गः --- ३९
लोकापेक्षयापि प्रमाणाभ्युपगमः बालविलास) -- ३९
यथाकथंचित्प्रमाणमभ्युपगम्य तत्समालोचनम् --------------------------------------- ३९
विधिवत् निषेधोपि प्रत्यक्षतः सिद्धः -- ४०
प्रमेयत्वस्य होतः कालात्वयापदिष्टत्वम् -- ४०
प्रतिभाससमानत्वमपि स्वतः परतो वा -- ४०
स्वतस्त्वे तदसिद्धम्, घटपटादीनां स्वतः प्रतिभाससमानत्वाभावात् ----------------------- ४०
बेदानां ब्रह्मविवर्तत्वमपि न युक्तम्... --- ४०
पक्ष-हेतु-दृष्टान्ताः परस्परभिन्ना अभिन्ना वा -- ४१
भिन्नत्वे द्वैतसिद्धिः -- ४१
अभिन्नत्वे तेषामेकरूपतापत्तिः --- ४१
हेतोरद्वैतसाधने पुनः द्वैतप्रसङ्गः --- ४१
हेतुना विना तत्साधने च वाङ्मात्रतः द्वैतस्यापि सिद्धिः --------------------------------- ४१
अदैतैकान्ते कर्मद्वैतादीनामभावः -- ४१
प्रकरणमुपसंहरन् सापेक्षमेव तत्त्वं प्रमाणविषयमिति सप्तभङ्गीदिशा प्रदर्शयति --------४१-४२
वक्तव्यावक्तव्यतत्त्व विचारः -- ४३-४६
तत्त्वं सकलविकल्पवाग्गोचरातीतं (अवक्तव्यम्),.... ------------------------------------ ४३
जैनाः तत्समालोचयन्तः प्राहुः --- ४४
शब्दार्थयोर्वाच्यवाचकसम्बन्धसद्भावः -- ४४
सहजयोग्यतासङ्केतवशाच्छब्दोर्थज्ञानं जनयति -- ४४
विकल्पो न नामसंश्रय एव --- ४४
स च निश्चयात्मकविज्ञानरूपः -- ४४
तेन च यथावस्थितार्थप्रतिपत्ति-प्रवृत्ति-प्राप्तिः दृश्यते ------------------------------------ ४४
तन्न सकलविकल्पविकलं तत्त्वम् --- ४४
समन्तभद्राचार्यवचनेन तत्समर्थनम् --- ४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुनरपि तत्त्वं सामान्यविशेषात्मकं प्रमेयत्वहेतुना दृढयन्नाहुर्ग्रन्थकृतः ------------------ ४५
स्वोक्तं समन्तभद्रस्वामिवचनेन प्रमाणयन्ति -- ४५
यद्येवं तत्कथं न जैनानामेवैकशासनाधिपत्यमित्याशङ्कायाः समाधानम् ---------------- ४६
परिशिष्ट--- ४७
प्रमाणप्रमेयकलिका-गतावतरणानि --- ४९
प्रमाणप्रमेयकलिकायां निर्दिष्टा न्यायाः-- ५०
प्रमाणप्रमेयकलिका-गत-निदर्शनवाक्यानि -- ५०
प्रमाणप्रमेयकलिकान्तर्गत-विशिष्ट-शब्दाः -- ५१
प्रमाणप्रमेयकलिकागत दार्शनिक-लाक्षणिक शब्दाः -- ५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org